॥ ओ३म् ॥

वेद प्रकाश

सम्पादक—विजयकुमार फो० नं० २६२७६५
आदरी सहसम्पादक—ब्र० जगदीश विद्यार्थी फो० नं० २२१३२८

कुरआन् में

अन्य मतावलम्बियों के लिए

कुछ अतिकठोर, उत्तेजक वाक्यों का संग्रह

(१) इज़ा लक़ुल्लज़ीन आमनू क़ालू आमन्ना, व इज़ा ख़लौ इला शयात्वीनिहिम् कालू इन्ना मअ़कुम् इन्नमा नः हनु मुस्तः ज़िऊन्।
(सू० २। रु० २। आ० १४)

अर्थ :—और जब उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान ला चुके तो कहते हैं हम ईमान ला चुके हैं, और जब तनहाई में अपने शैतानों से मिलते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो सिर्फ (मुसलमानों को) बनाते हैं।

(इस आयत में ईसाई और यहूदी विद्वानों को शयातीन कहा गया है)।

(२) फ़इल्लम् तफ़्अ़लू वलन् तफ़्अ़लू फ़त्तक़ुन्नारल्लती, वक़ूदुहन्नासु वल् हिजारतु, उअ़िद्दत् लिल् काफ़िरीन्।
(सू० २। रु० ३। आ० २४)

(इस आयत में दोज़ख की आग का ईंधन मूर्तिपूजकों और मूर्तियों को बताया गया है। यह आयत सत्यार्थ प्रकाश के १४वें समुल्लास के खण्ड नं० ८ में आ चुकी है)।

सेल (Sale) साहब False gods and idols मुराद ली हुई फर्माते हैं। देखो पृष्ठ ३। (Foot Note).

(३) फ़ इम्मायातियन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ़मन् तबिअ़ हुदाया फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् वला हुम् यः ज़नून्।
(सू० २। रु० ४। आ० ३८)

वल्लज़ीन कफ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइक अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून्। (सू० २। रु० ४। आ० ३९)

अर्थ :—अगर हमारी तरफ से तुम लोगों के पास कोई हिदायत पहुंचे (तो उस पर चलना क्योंकि) जो हमारी हिदायत की पैरवी करेंगे उन पर न तो (किसी क़िस्म का) खौफ़ होगा और न वह आज़ुर्दा ख़ातिर (दुःखित) होंगे।

और जो लोग नाफ़र्मानी करेंगे और हमारी आयतों को झुठलायेंगे वही दोज़खी (नरकवासी) होंगे, और वह हमेशा-हमेशा दोज़ख में रहेंगे।

(इस आयत में क़ुर्आन् व मुअ़ज्ज़ात से इन्कार करने वालों को और उनको झुठलाने वालों को) दोज़ख (नरक) में हमेशा के लिए रहने वाला बताया गया है।

(४) वइज़् क़ाल म्सा लिक़ौमिही याक़ौमि ! इन्नकुम् ज़्वलम्तुम् अन्फ़ुसकुन् बितिख़ाज़िकुमुल्इज्ल फ़तूबू बारिइकुम् फ़क्तुलू अन्फ़ुसकुम्, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् अिन्द बारिइकुम्।

(सू० २। रु० ६। आ० ५४)

अर्थ :—और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि भाइयो! तुमने बछड़े की पूजा के इख्तयार करने से अपने ऊपर बड़ा ही ज़ुल्म किया तो (अब) अपने खालिक़ की जनाब में तौबा करो और (वह यह कि अपने लोगों के हाथों से) अपने तईं हलाक करो। जिसने तुमको पैदा किया है उसके नज़दीक तुम्हारे हक़ में यही बिहतर है।

(इस आयत में बछड़े या गाय वग़ैरः की पूजा करने वालों को) वाजिबुल क़त्ल (मारने योग्य) करार दिया है, जो हमेशा के लिए हिन्दू मुसलमानों में झगड़े का कारण है।

(५) व लिल् काफ़िरीन् अज़ाबुम्मुहीन्।

(सू० २। रु० ११। आ० ९०)

अर्थ :—और मुन्किरों के लिये ज़िल्लत का अज़ाब है। (इस्लाम को न मानने वालों का भयंकर तिरस्कार होगा)

(६) मन् कान अदूवल्लिल्लाहि व मलाइकतिही व रुसुलिही व

जिब्रील व मीकाल फ़ इन्नल्लाह अदूवल्लिल् काफ़िरीन् ।
(सू० २ । रु० १२ । आ० ९८)

यह आयत १४वें समुल्लास के २१वें खण्ड में आ चुकी है कि जो अल्लाह, फ़रिश्तों, पैगम्बरों और जिब्राइल का शत्रु है अल्लाह भी ऐसे क़ाफिरों का शत्रु है ।

(७) इन्नल्लज़ीन क़फ़रू वमातू वहुम् कुफ़्फ़ारुन् उलाइक अलैहिम् लअ्नतुल्लाहि वल् मलाइकति वन्नासि अज्मअीन् । खालिदीन फ़ीहा, लायुख़फ़्फ़फ़ु अन्हुमुल् अज़ाबु वलाहुन् युन्ज़रून् ।
(सू० २ । रु० १९ । आ० १६१)

अर्थ :—जो लोग (जीते जी दीन हक़ से) इन्कार करते रहे, और इन्कार ही की हालत में मर गए यही है जिन पर खुदा की लानत और फ़रिश्तों की और आदमियों की सब की, हमेशा-हमेशा इसी (फिटकार) में रहेंगे, न तो उन (पर) से अज़ाब (दुःख) ही हलका किया जावेगा और न उनको (अज़ाब के बीच-बीच में मुहलत ही मिलेगी ।

(८) मसलुल्लज़ीन क़फ़रू कमसलिल्लज़ी यन्अ्क़ु बिमाला यस्मउ इल्ला दुआअंवनिदाअन्, सुम्मुम् बुक्मुन् उम्युन् फ़हुन् लायअ्-क़िलून् ।
(सू० २ । रु० २१ । आ० १७१)

"और जो लोग काफ़िर हैं (बुतपरस्ती वा मूर्तिपूजा में) उनकी मिसाल उस शख्स की सी है जो एक चीज़ के पीछे पड़ा चिल्ला रहा है (और) वह सुनती-सुनाती खाक नहीं (तो उसका चिल्लाना) महज़ (बेसूद) बुलाना और पुकारना है (जिसका कुछ नतीजा नहीं बुतों पर क्या मुन्हसर है यह लोग खुद भी) बहरे, गूँगे, अन्धे हैं तो यह समझते (बूझते) कुछ भी नहीं ।

इस आयत में मूर्तिपूजकों की और उनकी मूर्तियों की हँसी उड़ाई गई है और दोनों को बहरे, गूंगे और अन्धे कहा गया है ।

(९) व मंय्यर्तदिद् मिन्कुम् अन् दीनिही फ़यमुत् वहुव काफ़िरुन् फ़ उलाइक हुबित्वत् अअ्मालुहुम् फ़िद्दुनिया वल् आख़िरति, वउलाइक अस्हाबुन्नारि, हुम् फ़ीहा खालिदून् ।
(सू० २ । रु० २७ । आ० २१७)

और जो तुममें अपने दीन से बरगश्ता (विमुख) होगा और कुफ्र ही की हालत में मर जायगा तो ऐसे लोगों का किया-कराया (क्या दुनिया) और (क्या) आखिरत (परलोक) (दोनों) में अकारत और यही हैं दोज़ख़ी (और) वह हमेशा (हमेशा) दोज़ख (नरक) ही में रहेंगे।

(१०) वमन् आद फ़ उलाइक अस्हाबुन्नार्।

(सू० २ । रु० ३८ । आ० २७५)

और जो (मनाही हुए पीछे) फिर (सूद) ले तो ऐसे ही लोग दोज़ख़ी हैं और वह हमेशा दोज़ख ही में रहेंगे।

(११) इन्नल्लज़ीन कफ़रू लन् तुग़्निय अन्हुम् अम्वालुहुम् वला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैआ, व उलाइकहुम् वक़ूदुन्नार।

(सू० ३ । रु० २ । आ० ६)

जो लोग (दीन इस्लाम से) मुन्किर हैं। अल्लाह के हाँ न तो उनके माल ही उसके कुछ काम आएँगे और न उनकी औलाद ही (उनके कुछ काम आयगी) और यही हैं जो दोज़ख के ईंधन होंगे।

(१२) लायत्तख़िज़िल् मोमिनूनल् काफ़िरीन औलियाअ मिन्दूनिल् मोमिनीन्, वमंय्यफ़्अल् ज़ालिक फ़लैस मिनल्लाहि फ़ी शैइन् इल्ला अन् तत्तक़ू मिन् हुम् तुक़ाः।

(सू० ३ । रु० ३ । आ० २७)

मुसलमानों को चाहिये कि मुसलमानों को छोड़कर काफ़िरों को अपना दोस्त न बनाएँ, और जो ऐसा करेगा तो उससे और अल्लाह से कुछ सरोकार नहीं. मगर (इस तदबीर से) किसी तरह पर उन (की शरारत) से बचना चाहो तो (तो खैर)।

(यहाँ मौलवी मुहम्मद अली आदि अन्य सब अनुवादकों ने Protectors की जगह Friends यही अनुवाद किया)

(१३) फ़ अम्मल्लज़ीन कफ़रू फ़ उअ़ज़्ज़िबुहुम् अज़ाबन् शदीदन् फ़िद्दुनिया वल् आख़िरति, वमालहुम् मिन्नासिरीन्।

(सू० ३ । रु० ६ । आ० ५५)

सो जिन्होंने (तुम्हारी नबुव्वत से) इन्कार किया उनको तो दुनिया

और आखिरत (दोनों में बड़ी सख्त मार देंगे और कोई उनका हामी व मददगार न होगा (कि उनको हमसे बचाये।)

(१४) वमंय्यब्तग़ि ग़ैरल् इस्लामि दीनन् फ़लंय्युक़्बल मिन्हु, वहुव फ़िल आख़िरति मिनल् ख़ासिरीन्।

(सू० ३। रु० ९। आ० ८४)

और जो शख्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन को तलाश करे तो खुदा के यहाँ उसका यह दीन मक्बूल (स्वीकृत) नहीं और वह आखिरत में ज़ियांकारों (टोटे वालों) में होगा, खुदा ऐसे लोगों को क्यों हिदायत देने लगा जो (तौरात की पेशीन) गोइयों (भविष्य वाणियों) से पैग़म्बर-आखिरुज्ज़माँ पर ईमान लाए पीछे लगे कुफ्र करने।

उलाइक जज़ाउहुम् अन्न अ़लैहिम् लअ़्नतल्लाहि वल् मलाइकति वन्नासि अज्मअ़ीन्, ख़ालिदीन फ़ीहा, ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुमुल् अ़ज़ाबु वलाहुम् युन्ज़रून्। (आ० ८६)

इनकी सज़ा यह है कि इन पर खुदा की और फ़रिश्तों की और (दुनिया जहान के) लोगों की सब की फिटकार, कि उसी फिटकार में हमेशा (हमेशा) रहेंगे, न तो (आखिरत में) इनसे अज़ाब (कष्ट) ही हलका किया जावेगा और न उनको मुहलत ही दी जावेगी।

इन्नल्लज़ीन कफ़रू वमातू वहुम् कुफ़्फ़ारुन् फ़लंय्युक़्बल मिन् अहदिहिम् मिल् उल् अर्ज़ि ज़हबंव्वल विफ़्तदा बिही उलाइक लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीमुंव्वमा लहुम् मिन्नास्विरीन्। (आ० ९०)

जो इस्लाम से मुन्किर हुए और इन्कार ही की हालत में मर गये उनमें का कोई शख्स (कुर्रए) ज़मीन (की गोल) भर कर भी सोना मुआवज़े में देना चाहे तो हर्गिज़ क़ुबूल नहीं किया जावेगा, यही लोग हैं जिनको दर्दनाक अज़ाब होगा और (उस वक्त) उनका कोई भी मददगार न होगा।

(१५) वला यःसबन्नल्लज़ीन कफ़रू अन्नमा नुम्लो लहुम् खैरुल्लि अन्फ़ुसिहिम्, इन्नमा नुम्ली लहुम् लियज़्दादू इस्मन्, वलहुम् अ़ज़ाबुम्मुहीन्। (सू० ३। रु० १८। आ० १७७)

और जो लोग (दीन इस्लाम से) इन्कार कर रहे हैं, इस ख़याल में न रहें कि हम जो उनको ढील दे रहे हैं यह कुछ उनके हक़ में बिहतर है, हम तो उनको सिर्फ इसलिए ढील दे रहे हैं ताकि और गुनाह (पाप) समेट लें और (आखिरकार) उनको ज़िल्लत (तिरस्कार) की मार है।

(१६) इन्नल्लज़ीन कफ़रू बिआयातिना सौफ़ नुस्लीहिम् नारन् कुल्लमा नज्वेजत् जुलूदुहुम् बद्दल्नाहुम् जुलूदन् ग़ैरहा लियज़ूक़ुल् अज़ाब, इन्नल्लाह कान अज़ीजन हकीमा।

(सू० ४। रु० ८। आ० ५६)

जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया हम उनको (कयामत के दिन) दोज़ख (नरक) में (लेजा) दाखिल करेंगे, जब उनकी खालें गल जायेंगी तो हम इस ग़र्ज़ से कि अज़ाब (का मज़ा अच्छी तरह) चखें, गली हुई खालों की जगह उनकी दूसरी (नई) खालें पैदा कर देंगे बेशक अल्लाह (बड़ा) जबरदस्त साहब तदबीर है।

(१७) इन्नल्लज़ीन कज़्ज़बू बिआयातिना वस्तक्बरू अन्हा लातुफ़त्तहु लहुम् अब्वाबुस्समाइ वला यद्ख़ुलूनल् जन्नत हत्ता यलिजल् जमलु फ़ी सम्मिल् ख़ियात्वि, व कज़ालिक नज्ज़िल् मुज्रिमीन्।

बेशक जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे अकड़ बैठे न तो उनके लिये आसमान के दरवाज़े खोले जावेंगे और न बहिश्त ही में दाखिल होने पायेंगे यहाँ तक कि ऊँट सुई के नाके में से (होकर न) गुज़र जाए. और मुज्रिमों (अपराधियों) को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं।

लहुम् मिन् जहन्नम मिहादुंव्वमिन् फ़ौक़िहिम् ग़वाशिन्, व कज़ालिक नज्ज़िज़्वालिमीन्।

(सू० ७। रु० ५। आ० ४०-४१)

कि उनके लिए आग का बिछौना होगा उनके ऊपर से आग ही का ओढ़ना, और सरकश लोगों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं।

(१८) लक़द् कफ़रल्लज़ीन क़ालू इन्नल्लाह हुवल् मसीहुब्नु मर्यम्।

(सू० ५। रु० ३। आ० १७)

जो लोग कहते हैं कि मर्यम के बेटे मसीह वही खुदा हैं, कुछ शक नहीं

कि यह काफ़िर हो गये।

(१९) **याऐयुहल्लज़ीन ग्रामनू लातत्तख़िज़ुल्यहद वन्नस्वारा ग्रौलियाग्र बग्र् ज़्वुहुम् ग्रौलियाउ बग्र् ज़िवन्, वमंय्यतवल्लहुम् मिन्कुम् फ़इन्नहुम् मिन्हुम्, इन्नल्लाह लाय:दिल् कौमज़्ज़्वालिमीन्।**

(सू० ५। रु० ८। आ० ५१)

डिपुटी नज़ीर ग्रहमद का ग्रनुवाद:—

मुसलमानो यहूद व नसारा को दोस्त न बनाग्रो यह लोग तुम्हारी मुख़ालिफ़त में (बाहम) एक-दूसरे के दोस्त हैं ग्रौर तुममें से कोई उनको दोस्त बनायेगा तो बेशक वह (भी) उन्हीं में का (एक) है क्योंकि ख़ुदा (ऐसे) ज़ालिम लोगों को राह (रास्ता) नहीं दिखाया करता है।

(२०) **व मंय्युशाक़िक़िर्रसूल मिम् बग्र् दि मातबैयन लहुल् हुदा व यत्तबिग्र् ग़ैरसबीलिल् मोमिनीन नुवल्लिही मातवल्ला वनुस्वलिही जहन्नम, वसाग्रत् मस्वीरा।**

(सू० ४। रु० १७। आ० ११५)

ग्रौर जो शख़्स राहे रास्त के ज़ाहिर हुए पीछे पैग़म्बर से किनाराकश रहे ग्रौर मुसलमानों के रास्ते के सिवा (दूर रस्ते) होले तो जो (रास्ता) उसने इख़्तयार कर लिया है हम उसको जहन्नम (नरक) में (लेजा) दाखिल करेंगे ग्रौर वह (बहुत ही) बुरी जगह है।

(२१) **याऐयुहल्लज़ीन ग्रामनू लातत्तख़िज़ू ग्राबाग्रकुम् व इख़्वानाकुम् ग्रौलियाग्र इनिस्तहब्बुल् क़ुफ़्राग्रलल् ईमानि, व मैंययतवल्लहुम् मिन्कुम् फ़उलाइक हुमुज़् ज़्वालिमून्।**

(सू० ९। रु० ३। आ० २३)

ग्रगर तुम्हारे बाप ग्रौर तुम्हारे भाई ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र को ग्रज़ीज़ रखें तो उनको (ग्रपना) रफ़ीक़ (मित्र) न बनाग्रो, ग्रौर जो तुम में से ऐसे बाप-भाइयों के साथ दोस्ती रखेगा तो यही लोग (हैं जो ख़ुदा के नज़दीक) नाफ़र्मान हैं।

(२२) **फ़इज़न् सलख़ल् ग्रश्हुरुल् हुर्मु फ़क़्तुलुल् मुश्रिकीन है सु बजत्तुमूमूहुम् वख़ुज़ूहुम् व: सुरूहुम् वक़् उद्लहुम् कल्ल मर्स्वद,**

फ़इन् ताबू व अक़ामुस्स्वलात व आतुज़्ज़कात फ़ख़ल्लू सबीलहुम् इन्नल्लाह ग़फ़ूरुर्रहीम्। (सू० ६। रु० १। आ० ५)

फिर जब अदब के महीने निकल जाएँ तो मुश्रिकीन (मूर्ति-पूजकों या ईश्वरेतर पदार्थ के पूजकों) को जहाँ पावो क़त्ल करो उनको गिरफ्तार करो और उनका मुहासरा करो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो फिर अगर वह लोग तोबा करें और नमाज़ पढ़ें और ज़कात (धार्मिक-कर) दें तो उनका रास्ता छोड़ दो क्योंकि अल्लाह बख़्शने वाला मिहरबान है।

(२३) याऐयुहल्लज़ीन आमनू इन्नमल् मुश्रिकून नज्सुन् फ़ला यक़्रबू मस्जिदल्ह़राम बअ़्द आमिहिम् हाज़ा, वइन्ख़िफ़्तुम् अ़ैलतन् फ़सौफ़ युग़्नीकुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्वलिही इन्शाअ, इन्नल्लाह अ़लीमुन् ह़कीम्। (सू० ६ रु० ४। आ० २८)
क़ातिलुल्लज़ीन लायोमिनून बिल्लाहि वलाबिल् यौमिल् आख़िरि वला युह़रिमून माह़र्रमल्लाहु वरसूलुहू, वला यदीनून दीनल् ह़क़्क़ि मिनल्लज़ीन ऊतुल् किताब ह़त्ता युअ़्त्वुल् जिज़्यत अ़ंय्यदिंव्वहुम् स्वाग़िरून्। (आ० २६)

मुसल्मानो मुश्रिक तो निरे गन्दे हैं तो इस बरस के बाद (अदब) व हुर्मत वाली मस्जिद (यानी ख़ाने काबा) के पास भी न फटकने पावें। और (उनके साथ लेन-देन बंद हो जाने से) तुम को मुफ़लिसी (ग़रीबी) का अंदेशा हो तो ख़ुदा (पर भरोसा रखो वह) चाहेगा तो तुमको अपने फ़ज़ल (अनुग्रह) से गनी (समृद्ध) कर देगा' बेशक ख़ुदा (सबकी नीयतों को) जानता (और) हिकमत वाला है।

अहले किताब जो न ख़ुदा को मानते हैं (जैसा कि मानने का हक़ है) और न रोज़ आख़िरत को और न अल्लाह और उसके रसूल की हराम की हुई चीजों को हराम समझते हैं और न दीन हक़ को तस्लीम करते हैं मुश्रिकों के अलावा इन (लोगों) से भी लड़ो यहाँ तक कि जलील होकर अपने हाथों से जज़िया दें।

(२४) याऐयुहल्लज़ीन आमनू क़ातिलुल्लज़ीन यलूनकुम् मिनल् कुफ़्फ़ारि वल् यजिदू फ़ीकम् ग़िल्ज़्वा। (सू० ६। रु० १६। आ० १२३)

मुसलमानो ! अपने आस-पास के काफिरों से लड़ो, और चाहिए कि वह तुममें करारापन मालूम करें। और जाने रहो कि अल्लाह उन लोगों का साथी है जो उनसे डरते हैं।

(२५) उलाइकल्लज़ीन कफ़रू बिआयाति रब्बिहिम् वलिक़ाइही फ़हबित्वत् अअ्मालुहुम् फ़लानुक़ीमु लहुम् यौमल् क़ियामति वज़्ना। ज़ालिक जज़ाउहुम् जहन्नमु बिमा कफ़रू वत्तख़ज़ू आयाती व रुसुली हुज़्वन्।

(सू० १८। रु० १२। आ० १०५-१०६)

यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने पर्वदिगार की आयतों को और उसके हुजूर में हाज़िर होने को न माना तो उनके अमल अकारत हो गए, तो कयामत के दिन हम उनके (आमाल नेक) का (रत्ती बराबर) वजन (भी हिसाब में) क़ायम नहीं रखेंगे।

यह जहन्नम इनकी उस बदकिरदारी का बदला है कि इन्होंने कुफ्र किया और हमारी आयतों और हमारे पैग़म्बर की हँसी उड़ाई।

(२६) वजअ़ल्नलअग़लाल फ़ी अअ़्नाक़िल्लज़ीन कफ़रू।

(सू० ३४। रु० ४। आ० ६३)

और जो लोग (दुनिया में) कुफ़्र करते रहे हम उनकी गर्दनों में तौक़ डाल देंगे।

(२७) वइन तअ़्जब् फ़ अ़जबुन् क़ौलुहुम् अइज़ा कुन्ना तुराबन् अइन्ना लफ़ी ख़ल्क़िन् जदीदिन्, उलाइकल्लज़ीन कफ़रू बिरब्बिहिम्, व उलाइकल् अग़लालु फ़ी अअ़्नाक़िहिम्, व उलाइक अस्हाबुन्नारि, हुम् फ़ीहा ख़ालिदून्।

(सू० १३। रु० १। आ० ५)

अर्थ :—और (ऐ पैग़म्बर) अगर तुम (दुनिया में किसी बात पर) आश्चर्य करो तो काफ़िरों का (यह) कहना भी आश्चर्यजनक ही है कि जब हम (गल-सड़ कर) मिट्टी हो जाँयगे तो क्या हम को (फिर) नये जन्म में आना होगा ? यही लोग हैं जिन्होंने अपने पर्वदिगार (की क़ुदरत) का इन्कार किया और यही लोग हैं जिनकी गर्दनों में क़यामत के दिनों

तौक़ (पड़े) होंगे और यही लोग हैं दोज़खी कि यह दोज़ख में हमेशा (हमेशा) रहेंगे।

(२८) बल्ज़ुय्यिन लिल्लज़ीन कफ़रू मक्रुहुम् व स्वुद्दू अनिस्सबील्, व मंय्युज़्वलिलिल्लााहु फ़मा लहू मिन् हाद्। लहुम् अज़ाबुन् फ़िल् हयातिद्दुनिया वल अज़ाबुल् आख़िरति अशक़्क़ु, वमा लहुम् मिनल्लााहि मिंव्वाक़्।

(सू० १३ । रु० ५ । आ० ३३ । ३४)

अर्थ :—बात यह है कि मुन्किरों को उनकी चालाकियां भली कर दिखाईं और राह (रास्ते) से रोक दिया, और जिसको खुदा गुमराह करे तो कोई उसका राह दिखाने वाला नहीं। इन लोगों के लिए दुनिया की जिन्दगी में (भी) अज़ाब है (और आख़िरत में भी) और आखिरत का अज़ाब (दुनिया के अज़ाब से) अलबत्ता बहुत (ज्यादा) सख्त है।

(२९) वस्तफ़्तहू व ख़ाब कुल्लु जब्बारिन् अनीद्। मिंव्वराइही जहन्नमु वयुस्क़ा मिम्माइन् स्वदीद्। यतजर्रउहू वला यकादु युसीग़ुहू व यातीहिल् मौतु मिन् कुल्लि मकानिंव्वमाहुव बिमय्यितिन्, व मिंव्वराइही अज़ाबुन् ग़लीज़।

(सू० १४ । रु० ३ । आ० १५-१७)

अर्थ :—और पैगम्बरों ने चाहा कि (उनका और काफ़िरों का झगड़ा कहीं) फैसले हो चुके (चुनांचे उनकी ख्वाहिश पूरी हुई) और हरएक हेकड़ ज़िद्दी हलाक हुआ (यह तो दुनिया की सज़ा थी और) उसके बाद (उसके लिए) दोज़ख है और (वहाँ उसको पीप का पानी पिलाया जायगा) कि उसको ज़बरदस्ती चस्कियाँ ले-लेकर पीएगा और (फिर भी) उसको गले से न उतार सकेगा और मौत (है कि) हर तरफ़ से आती (हुई दिखाई देती) है और वह (फिर भी नहीं मरता) और उसको (और) अज़ाबे सख्त (भी) दर पेश है।

(३०) व जअ़लू लिल्लााहि अन्दादल्लियुज़्विल्लू अन् सबीलिही, कुल् तमत्तऊ फ़इन्न मस्वीरकुम् इलन्नार्।

(सू० १४ । रु० ५ । आ० ३०)

अर्थ :—और उन लोगों ने अल्लाह के मद्दे मुक़ाबिल (दूसरे माबूद) खड़े किए हैं ताकि (लोगों को) उसके रास्ते से गुमराह करें, (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि (खैर चन्द रोज़ दुनिया में) रस-बस लो फिर तो तुम-को दोज़ख की तरफ़ जाना ही है।

(३१) इन्नल्लज़ीन ला योमिनून बिआयातिल्लाहि ला यः दीहिमुल्लाहु वलहुम् अज़ाबुन् अलीम्। (सू० १६। रु० १४। आ० १०४)
मन् कफ़र बिल्लाहि मिम् बअ्दि ईमानिही इल्ला मन् उक्रिह बक़ल्बुहू मुत्वमइन्नुम् बिल् ईमानि व लाकिम्मन् शरह बिल् कुफ़्रि स्वद्रन् फ़ अलैहिम् ग़ज़बुम् मिनल्लाहि, वलहुम् अज़ाबुन् अज़ीम्। (सू० १६। रु० १४। आ० १०६)

अर्थ:—जो लोग (हेकड़ी और हठधर्मी से) ख़ुदा की आयतों पर ईमान नहीं लाते ख़ुदा भी उनको राहे रास्त नहीं दिखाया करता और (आख़िरत में) उनको अज़ाबे दर्दनाक (होना) है।

जो शख्स (कुफ़्र पर) मजबूर किया जावे मगर उसका दिल ईमान की तरफ से मुतमइन हो उससे (कुछ मुवाख़जा नहीं लेकिन जो शख्स ईमान लाए पीछे ख़ुदा के साथ कुफ़्र करे और कुफ़्र भी करे तो जी खोल कर तो ऐसे लोगों पर ख़ुदा का ग़ज़ब और उनके लिए बड़ा (सख्त) अज़ाब है।

(३२) व इज़ा क़रातल्क़ुर्आन जअ्ल्ना बैनक व बैनल्लज़ीन ला योमिनून बिल् आख़िरति हिजाबम्मस्तूरा। व जअ्ल्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् अकिन्नतन् अंय्यफ़्क़हूहु व फ़ी आज़ानिहिम् वक़्रा। (सू० १७। रु० ५। आ० ४५। ४६)

अर्थ : —और (ऐ पैग़म्बर) जब तुम क़ुरान पढ़ते होते हो हम तुममें और उन लोगों में जिनको आख़िरत का यक़ीन नहीं एक गाढ़ा पर्दा (हायल) कर देते हैं (ताकि राहे हक़ न देख सकें) और उनके दिलों पर ग़िलाफ़ डाल देते हैं ताकि क़ुरान को न समझ सकें और उनके कानों में (एक तरह की) गिरानी (पैदा कर देते हैं ताकि सुन न सकें)।

(३३) व मंय्यःदिल्लाहु फ़हुवल् मुःतदि, व मंय्युज़्लिल् फ़लन् तजिद लहुम् औलियाअ मिन् दूनिही, व नःशुरुहुम् यौमल् क़ियामति

अ़ला वुजूहिहिम् उम्यंव्व बुक्मंव्व स्वुम्मा, मावाहुम् जहन्नमु, कुल्लमा ख़बत् ज़िद्नाहुम् सअ़ीरा। ज़ालिक जाज़ाउहुम् बिअन्न-हुम् कफ़रू बिआयातिना व क़ालू अइज़ा कुन्ना अ़िज़्वामंव्वरु-फ़ातन् अइन्नल् मब्ऊसून ख़ल्क़न् जदीदा।

(सू० १७। रु० ११। आ० ६७। ६८)

अर्थ:—और जिसको खुदा हिदायत दे वही राहे रास्ता पर है, और जिस-को (वह) गुमराह करे तो फिर (ए पैग़म्बर) ऐसे गुमराहों के लिए तुम खुदा के सिवा (दूसरे) मददगार (भी) नहीं पाओगे और क़याभत के दिन हम उन लोगों को उनके मुँह के वल उठाएँगे अन्धे और गूंगे और बहरे उनका (आखरी) ठिकाना दोज़ख ; जब बुझने को होगी हम उनके लिए (उसको) और ज्यादा भड़कावेंगे, यह (जहन्नुम इसलिए) उनकी सजा है कि वह हमारी आयतों से इन्कार किया करते, और (क़यामत का होना सुन कर) कहा करते थे कि जब हम (मरे पीछे गल सड़ कर) हड्डियाँ और रेजा रेज़ा हो जायेंगे ती क्या हम अज़-सरे-नौ पैदा करके उठा खड़े किए जायेंगे।

(३४) **उलाइकल्लज़ीन कफ़रू बिआयाति रब्बिहम् व लिक़ाइही फ़ हबित्वत् अअ़्मालुहुम् फ़ला नुक़ीमु लहुम् यौमल् क़ियामति वज़्ना। ज़ालिक जज़ाउहुम् जहन्नमु बिना कफ़रू वत्तख़ज़ू आयाती वरुसुली हुज़ुवन।**

(सू० १८। रु० १२। आ०। १०५-१०६)

अर्थ:—यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने पर्वर्दिगार की आयतों को और (क़यामत के दिन) उसके हुजूर में हाजि़र होने को न माना तो इनके अमल अकारत हो गए, तो क़यामत के दिन हम इन (के आमाले नेक) का (रत्ती बराबर) वज़न (भी हिसाब में) क़ायम नहीं रखेंगे। यह जहन्नुम इन (की उस बदकिरदारी) का बदला है कि उन्होंने कुफ्र किया और हमारी आयतों और हमारे पैग़म्बरों की हँसी उड़ाई।

(३५) **अलम् तर अन्ना अर्सल्नश्शयात्वीन अ़लल् काफ़िरीन तउज़्ज़ु-हुम् अज़्ज़न्। फ़ला तअ़्जल् अ़लैहिम्, इन्नमा नउद्दुलहुम् अ़द्नन्। यौम नःशुरुल् मुत्तक़ीन इलर्रह्मानि वफ़्दन्। व**

नसूक़ुल्मुज्रिमीन इला जहन्नम विर्दन् ।

(सू० १९ । रु० ६ । आ० ८३ से ८६ तक)

अर्थ :—(ऐ पैग़म्बर) क्या तुमने (इस बात पर) नज़र नहीं की कि हमने शैतानों को काफ़िरों पर छोड़ रखा है कि वह इनको उकसाते रहते हैं तो (ऐ पैग़म्बर) तुम इन (काफ़िरों) पर (नुज़ूले अज़ाब की) जल्दी न करो हम इनके लिए (रोज़े क़यामत के आने के) बस (दिन) गिन रहे हैं जब कि हम पर्हेज़गारों को (खुदाए) रहमान के (यानी अपने) हुज़ूर में महमानों की तरह जमा करेंगे, और गुनहगारों को प्यासे (ऊँटों की तरह) जहन्नुम की तरफ हाँकेंगे ।

(३६) वमन् अअ्‌रज़ अन् ज़िक्री फ़इन्नलहू मअीशतन् ज़न्कौं व न:शुरुहू यौमल क़ियामति अअ्‌मा । क़ाल रब्बि लिम हशर्तनी अअ्‌मा व क़द् कुन्तु बस्वीरा । क़ाल कज़ालिक अतत्क आयातुना फ़ नसीतहा व कज़ालिकल् यौम तुंसा ।

(सू० २० । रु० ७ । आ० १२४ से १२६ तक)

अर्थ :—और जिसने हमारी याद से रूगर्दानी की तो उसकी जिन्दगी ज़ोक़ में गुजरेगी और क़यामत के दिन (भी) हम उसको अन्धा (करके) उठायेंगे, (वह) कहेगा ऐ मेरे पर्वर्दिगार तूने मुझको अन्धा (करके) क्यों उठाया और मैं तो (दुनिया में अच्छा-खासा) देखता (भालता) था, (खुदा) फ़र्माएगा ऐसा ही (होना चाहिए था दुनिया में) हमारी आयतें तेरे पास आईं मगर तूने उनकी कुछ खबर न ली, और उसी तरह आज तेरी (भी) खबर न ली जायगी ।

(३७) वलक़द् आतैना इब्राहीम रुश्दहू मिन् क़ब्लु वकुन्ना बिही आ़लिमीन् । इज़् क़ाल लिअबैहि व क़ौमिही मा हाज़िहित्तमासीलुल्लती अन्तुम् लहा आ़किफ़ून् । क़ालू वजद्ना आबाअना लहा आ़दिबीन् । क़ाल लक़द् कुंतुम् अंतुम् व आबाउकुम् फ़ी ज़्वलालिम्मुबीन् । क़ालू अजेतना बिल्हक़्क़ि अम् अन्त मिनल् लाअ़्बीन् । क़ाल बल् रब्बुकुम् रब्बुस्समावाति वल् अर्ज़िवल्लज़ी फ़त्वरहुन्न, व अन अ़ला ज़ालिकुम् मिनश्शाहिदीन् । वतल्लाहि लअकीदन्न अस्वनामकुम् बअ्‌द अन् तुवल्लू मुद्बिरीन् ।

फ़ जअ़लहुम् जुज़ाज़न् इल्ला कबीरल्लहुम् लअ़ल्लहुम् इलैहि यर्जिऊन् । क़ालू मन् फ़अ़ल हाज़ा बिआलिहतिना इन्नहू लमिनज़्ज़ालिमीन् । क़ालू समिअ़्ना फ़तँ यज़्कुरुहुम् युक़ालु लहू इब्राहीम् । क़ालू फ़ातू बिही अ़ला अअ़युनिन्नासि लअ़ल्लहुम् यश्हदून् । क़ालू अअन्त फ़अ़ल्त हाज़ा बिआलिहतिन या। इब्राहीम् । क़ाल बल् फ़अ़लहू कबीरुहुम् हाज़ा फ़स्अलूहुम् इन् कानू यंत्विक़न् । फ़ रजअ़ू इला अंफ़ुसिहिम् फ़क़ालू इन्नकुम् अंतुमुज़्ज़ालिमून् । सुम्म नुकिसू अ़ला रुऊसिहिम्, लक़द् अ़लिम्त मा हाउलाइ यंत्विक़ून् । क़ाल अफ़तअ़्बुदून मिन् दूनिल्लाहि माला यंफ़उ़कुम् शैअौं व ला यज़ुर्रुकुम्, उफ़्फ़िल्लकुम् वलिमा तअ़्बुदून मिन् दूनिल्लाहि, अफ़ला तअ़्क़िलून् ।

(सू० २१ । रु० ५ । आ० ५१ से ६७ तक)

क़ालू हर्रिक़ूहु वंसुरू आलिहतकुम् इन् कुंतुम् फ़ाइलीन् ।

(आ० ६८)

क़ुल्ना या नारु ! कूनी बर्दंव्वसलामन् अ़ला इब्राहीम् ।

(आ० ६९)

अर्थ :—और इब्राहीम को हमने शुरू ही से फ़हमे सलीम अता की थी और हम उन (की सलाहियत) से (ख़ूब) वाक़िफ़ थे जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम (के लोगों) से कहा कि (यह) मूरतें जिन (की परस्तिश) पर तुम जमे बैठे हो यह हैं क्या चीज़ ? वह बोले हमने अपने बड़ों को इन ही की परस्तिश करते देखा है । (इब्राहीम ने) कहा कि बेशक तुम्हारे और तुम्हारे बड़े सरीह गुमराही में पड़े रहे, वह बोले क्या तू हमारे पास सच्ची बात लेकर आया है या दिल्लगी करता है, (इब्राहीम ने) कहा (दिल्लगी की बात नहीं) बल्कि आसमान व ज़मीन का पर्वर्दिगार जिसने इनको पैदा किया (वही तुम्हारा भी पर्वर्दिगार है और मैं इसका गवाह हूँ, और (आहिस्ता से यह भी कहा कि) वख़ुदा तुम्हारे पीठ फेरे और गए पीछे मैं तुम्हारे बुतों के साथ चाल करूँगा, चुनांचे (इब्राहीम ने) बुतों को (तोड़-फोड़) टुकड़े-टुकड़े कर दिया, मगर उनके बड़े (बुत को इस ग़रज से रहने दिया) कि वह उस

की तरफ रुजू करें। (जब लोगों को बुतों के तोड़े जाने का हाल मालूम हुआ तो) उन्होंने कहा (अरे) हमारे माबूदों के साथ यह गुस्ताखी किसने की? इसमें शक नहीं कि उसने बड़ा ही जुल्म किया, (बाज़) बोले कि वह नौज-वान (आदमी) जिसको इब्राहीम के नाम से पुकारा जाता है उसको हमने (बुराई के साथ) इन (बुतों) का तज़करा करते सुना है। (लोगों ने) कहा तो उसको (सब) आदमियों के सामने लाओ ताकि (जो कुछ जवाब दे) लोग (उसके) गवाह रहें। (ग़र्ज इब्राहीम बुलाए गए और) लोगों ने (उनसे) पूछा कि इब्राहीम ने क्या हमारे माबूदों के साथ यह (हरकत) तूने की है? (इब्राहीम ने) कहा, (नहीं), बल्कि यह (बुत) जो इन (सब) में बड़ा है उसने यह हरकत की (होगी), और अगर यह (बुत) बोल सकते हों तो इन्हीं से पूछ देखो, उस पर लोग अपने जी में सोच और (आपस में) लगे कहने कि बिला शुबह तुम ही सरे नाहक़ हो, फिर अपने सरों के बल औंधे (इसी गुमराही में) ढकेल दिए गए और (इब्राहीम से बोले तो यह बोले कि) तुमको तो मालूम है कि यह (बुत) बोला नहीं करते। (इब्राहीम ने) कहा क्या तुम खुदा के सिवा ऐसी चीज़ों को पूजते हो जो न तुमको कुछ फ़ायदा ही पहुंचाएँ और न तुमको (किसी तरह का) नुकसान ही पहुँचाएँ। तुफ़ है तुम पर और उन चीज़ों पर जिनको तुम खुदा के सिवा पूजते हो क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते। वह (आपस में) लगे कहने कि अगर तुमको (कुछ) करना है तो इब्राहीम को (आग में) जला दो और अपने माबूदों की मदद करो। (चुनांचे उन लोगों ने इब्राहीम को आग में झोंक दिया)। हमने (आग को) हुक्म दिया ऐ आग! इब्राहीम के हक़ में ठंडक और सलामती (की मूजिब) बन।

(३८) **इन्नकुम् व मा तअ्बुदून मिन् दूनिल्लाहि हस्वबु जहन्नम, अन्तुम् लहा वारिदून। लौ कान हाउलाइ आलिहतम् मावरदूहा, व कुल्लुन् फ़ीहा खालिदून। लहुम् फ़ीहा ज़फ़ीरु-व्वहुम् फ़ीहा ला यस्मऊन्।**

(सू० २१ । रु० ७ । आ० ९८-१००)

अर्थ :—तुम और जिन चीज़ों की तुम खुदा के सिवा परस्तिश करते थे (वह सब) दोज़ख का ईंधन बनोगे (और) तुम (सब) को दोज़ख में

जाना होगा। अगर यह (तुम्हारे माबूद सच्चे) माबूद होते तो दोज़ख में न जाते, और (अब) तुम सब को इसी में हमेशा (हमेशा) रहना है। इन लोगों को दोज़ख में चिलवांस लगी होगी और वह (अपने चिल्लाने के गुल में) वहाँ (किसी दूसरे की बात भी) न सुन सकेंगे।

(३९) हाज़ानि ख़स्वमानिख़्तस्वमू फ़ी रब्बिहिम्, फ़ल्लज़ीन कफ़रू क़ुत्त्वेअ़त् लहुम् सियाबुम् मिन्नारिन्, युस्वब्बु मिन् फ़ौक़ि रुऊसिहिमुल् .हमीम्। युस्वहरु बिही माफ़ी बुत्वूनिहिम् वल् जुलूद्। व लहुम् मक़ामिउ़ मिन् .हदीद्। कुल्लमा अरादू अंय्यख़्रुजू मिन्हा मिन् ग़म्मिन् उअ़ीदू फ़ीहा, वज़ूक़ू अ़ज़ाबल् .हरीक़्। (सू० २२। रु० २। आ० १९ से २२ तक)

अर्थ :—(दुनिया में) यह दो (फ़रीक़) हैं एक-दूसरे के मुख़ालिफ़ (और) आपस में अपने पर्वदिगार के बारे में झगड़ते हैं, (एक फ़रीक़ ख़ुदा को मानता है और एक नहीं मानता) तो जो लोग (ख़ुदा को) नहीं मानते उनके लिए आग के कपड़े क़िता कराए गए हैं, (और वह उनको दोज़ख में पहनाए जाएंगे और) उनके सिरों पर से खौलता हुआ पानी उंडेला जाएगा जिस (की गर्मी) से जो कुछ उनके पेट में है (य.नी अंतड़ियाँ वग़ैर:) और खालें (सब) गल जायंगी, और उनके (मारने के) लिए लोहे के गुज़ होंगे (जिनसे उनकी कोबाकारी की जायगी) (और दोज़ख के अन्दर) घुटे-घुटे जब-जब (उनका जी घबरायगा और) उससे निकलना चाहेंगे तो उसी मे फिर ढकेल दिये जाएंगे, और (उनको हुक्म दिया जायगा कि आग में) जलने के अज़ाब (के मज़े पड़े) चखा करो।

(४०) व बुर्रिज़तिल् जहीमु लिल् ग़ावीन। व क़ील लहुम् ऐनमा कुंतुम् तअ्.बुदून, मिन् दूनिल्लाहि, हल् यन्स्वुरूनकुम् औ यन्तस्विरून। फ़ कुब्किबू फ़ीहा हुम् वल् ग़ावून व जुनूदु इब्लीस अज्मऊन्। (सू० २६। रु० ५। आ० ९१ से ९४ तक)

अर्थ :—और दोज़ख निकाल कर गुमराहों के सामने कर दी जायगी और उनसे कहा जायगा कि ख़ुदा के सिवा जिन चीजों को तुम पूजते थे (अब) वह कहाँ हैं, क्या वह तुम्हारी कुछ मदद कर सकते या (तुम्हारी

तरफ़ से कुछ) इन्तक़ाम ले सकते हैं, फिर वह (माबूद) और गुमराह लोग (जो उनकी परस्तिश करते थे) और शैतान के लश्कर सब के सब औंधे मुँह दोज़ख में ढकेल दिये जाएंगे।

(४१) इन्नल्लाह लअ़्नल् काफ़िरीन व अअ़द्द लहुन् सअ़ीरा, ख़ालिदीन फ़ीहा अबदा, ला यजिदून वलीयंव्वलानस्वीर्। यौम तुक़ल्लबु वुजूहुहुन् फ़िन्नारि यक़ूलून यालैतना अत्वअ़्नल्लाह व अत्वअ़्नर्रसूल्। (सू० ३३। रु० ८। आ० ६४। ६५। ६६)

अर्थः—बेशक अल्लाह ने काफ़िरों को फटकार दिया है और उनके लिए धधकती हुई आग तय्यार कर रक्खी है उसमें सदा को और हमेशा-हमेशा रहेंगे, (और) न (किसी को अपना) हिमायती ही पाएँगे और न मददगार (यह वह दिन होगा) जबकि इनके मुँह (सीख के कबाब की तरह दोज़ख की) आग में उलट-पलट किये जायेंगे और (अफ़सोस के तौर पर) कहेंगे कि ऐ काश! हमने (दुनिया में) अल्लाह का कहना माताऔर (ऐ काश) हमने रसूल का कहना माना हाता।

(४२) वल्लज़ीन कफ़रू लहुम् नारु जहन्नम, ला युक़्ज़्वा अ़लैहिम् फ़यमूतू वला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुम् मिन् अ़ज़ाबिहा, कज़ालिक नज्ज़ी कुल्ल कफ़ूर। वहुम् यस्वत्वरिख़ून फ़ीहा, रब्बना! अख़्रिज्ना नअ़्मल् स्वालिहन् ग़ैरल्लज़ी कुन्ना नअ़्मलु, अवलम् नुअ़म्मिर्कुम् मायतज़क्करु फ़ीहि मन् तज़क्कर व जाअकुमुन्नज़ीरु, फ़ज़ूक़ू फ़मा लिज़्ज़्वालिमीन मिन् नस्वीर्।

(सू० ३५। रु० ४। आ० ३६-३७)

अर्थः—और जो लोग मुन्किर हैं उनके लिए दोज़ख की आग (तय्यार) है, न तो उनको क़ज़ा आती है कि मर रहें और न दोज़ख का अज़ाब ही उनसे हल्का किया जाता है, हम हरएक नाशुक्र को इसी तरह सज़ा दिया करते हैं। और यह लोग दोज़ख में (पड़े) चिल्लाते होंगे कि ऐ हमारे पर्वरदिगार हमको (यहाँ से) निकाल कर फिर दुनिया में ले चल कि हम जैसे अमल करते रहते थे वैसे नहीं (बल्कि) नेक अमल करेंगे। (हम उनको जवाब देंगे कि) क्या हमने तुमको इतनी उम्रें नहीं दी थीं कि जिसको

सोचना (मंजूर) होता वह इतनी उम्र में (अच्छी खासी तरह) सोच-समझ लेता, और (उसके अलावा) तुम्हारे पास (हमारे अज़ाब से) डराने वाला (रसूल भी) पहुँचा, तो अब (अपने किए के) मजे चखो कि नाफ़र्मान लोगों का (यहाँ) कोई मददगार नहीं।

(४३) लक़द् .हक़्क़ल् क़ौलु अ़ला अक्सरि हिम् ला योमिनून् । इन्ना जअ़ल्ना फ़ी अअ़्नाक़िहिम् अग़्लालन् फ़हिय इलल् अज़्क़ानि फ़हुम् मुक़्म.हून् । व जअ़ल्ना मिम्बैनि ऐदीहिम् सद्दंव्वमिन् ख़ल्फ़िहिम् सद्दन् फ़ अग़्शैनाहुम् फहुम् ला युब्स्विरून् ।

(सू० ३६ । रु० १ । आ० ७-९)

अर्थ:—इनमें से अक्सर पर तो फ़र्मूदा (ख़ुदा) पूरा हो चुका है तो यह (किसी तरह) मानने वाले नहीं, हमने इनकी गर्दनों में (भारी-भारी) तौक़ डाल दिये हैं और वह ठोड़ियों तक (फँसे हुए) हैं तो इनके सिर (ऐसे) उलझकर रह गए हैं (कि इनको) रस्ता दिखाई ही नहीं देता। और हमने एक दीवार (तो) इनके आगे बनाई और एक दीवार इनके पीछे, और ऊपर से इनको दिया ढाँप तो यह देख ही नहीं सकते।

(४४) क़ुलिल्लाह अअ़्बुदु मुख़्लिस्वल्लहू दीनी, फ़अ़्बुदू माशेतुम् मिन् दूनिही, क़ुल् इन्नल् ख़ासिरीनल्लज़ीन ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् व अःलीहिम् यौमल् क़ियामति, अला ! ज़ालिक़ हुवल् ख़ुस्रा-नुल् मुबीनु लहुम् मिन् फ़ौक़िहिम् ज़्वुललुम् मिनन्नारि व मिन् तःतिहिम् ज़्वुललुन्, ज़ालिक युख़व्विफ़ुल्लाहु बिही अ़िबादहू, या अ़िबादि फ़त्तक़ून् ।

(सू० ३९ । रु० २ । आ० १५-१६)

अर्थ :—(ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि मैं तो ख़ुदा ही की फर्माबर्दारी मद्दे नज़र रखकर उसी की इबादत करता हूँ, (रहे तुम) सो उसके सिवा जिसको चाहो पूजो, (तुम ही को उसका ख़मयज़ा भुगतना पड़ेगा। ऐ पैगम्बर इन लोगों से) कह दो कि फ़िल् हक़ीक़त घाटे में वह लोग हैं जो क़यामत के दिन अपना और अपने अहलो अयाल का नुक्सान कर लेंगे। सुनी जो ! यही तो सरीह घाटा है उनके ऊपर से आग ही का उनका ओढ़ना

होगा और उनके नीचे (आग ही का) बिछौना, यही (तो वह अज़ाब है) जिससे खुदा अपने बंदो को डराता है' तो ए हमारे बंदो ! हमारा ही डर मानो ।

(४५) अल्लज़ीन कज़्ज़बू बिल् किताबि व बिमा असंल्ना बिही रुसुलना, फ सौफ़ यअ्‌लमून। इज़िल्अग़लालु फ़ी अअ्‌नाक़िहिम् वस्सलासिलु युस्‌हबून, फ़िल्‌हमीमि, सुम्म फ़िन्नारि युस्जरून् । सुम्मक़ील लहुम् ऐन म कुंतुम् तुश्रिकून, मिन् दूनिल्लाहि, क़ालू ज़बल्लू अन्ना बल्लम् नकुन्नदऊ मिन् क़ब्लु शैअन् । कज़ालिक युज़िल्लुल्लाहुल् काफ़िरीन् ।

(सू० ४० । रु० ८ । आ० ७० से ७४)

अर्थ : – (यह) वह लोग (हैं) जो (इस) किताब (यानी कुर्आन को झुठलाते हैं और उन) (किताबों और सहीफ़ों) को (भी झुठलाते हैं) जो तुमने अपने (दूसरे) पैग़म्बरों की मारफ़त भेजे हैं सो आखिरकार इनको (इस झुठलाने का नतीजा) मालूम हो जायगा । जब कि तौक़ इन की गर्दनों में होंगे, और (तौक़ों के अलावा) जंजीरें (पानी पिलाने के लिए) घसीटते हुए उनको झुलसते पानी में ले जायेंगे, फिर आग में झोंक जायेंगे, फिर इनसे पूछा जायगा कि खुदा के सिवा तुम जिन (माबूदों) को शरीके (खुदाई) ठहराते थे (अब) वह कहाँ हैं, वह कहेंगे (अब तो वह) हमसे खो गए (कि कहीं नज़र नहीं आते) बल्कि (असल बात तो यह है कि) हम तो (इससे) पहले (खुदा के सिवा) किसी (और) चीज़ की पूजा करते ही न थे, अल्लाह काफिरों को इसी तरह बदहवास कर देगा ।

(४६) इन्नल्लाह युद्‌ख़िलुल्लज़ीन आमनू व अमिलुस्स्वालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तःतिहल् अन्हारु, बल्लज़ीन कफ़रू यतमत्तऊन व याकुलून कमा ताकुलुल् अन्‌आमु वन्नारु मस्‌वल्लहुम् ।

(सू० ४७ । रु० २ । आ० १२)

अर्थ :—जो लोग ईमान लाए और उन्होने नेक अमल (भी) किए बिला सुबह: उनको अल्लाह (बहिश्त के ऐसे) बागों में ले जा दाखिल करेगा जिनके तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी और जो लोग मुंकिर हैं (दुनिया में बेफिक्री

के साथ) रसते बसते और जिस तरह चार पाए खाते (पीते) हैं यह भी (अनाप-शनाप) खाते (पीते) हैं, और इनका (आखिरी) ठिकाना दोज़ख है।

(४७) मुहम्मदुर्रसूललुल्लाहि, वल्लज़ीन मअ़हू अशिद्दाउ अ़लल् कुफ़्फ़ारि रुहमाउ बैनहुम्। (सू० ४८ । रु० ४ । आ० २९)

अर्थ :—मुहम्मद खुदा के भेजे हुए (पैग़म्बर) हैं, और जो लोग उनके साथ हैं काफ़िरों के हक़ में बड़े सख्त (हैं मगर) आपस में रहम दिल।

(४८) सुम्म इन्नकुम् ऐयुहज़्ज़वाल्लूनल् मुकज़्ज़िबून्। ल आकिलून मिन् शजरिम् मिन् ज़क्कूमिन्, फ़मालिऊन मिन्हल्बुत्वून, फ़ शारिबून अ़लैहि मिनल् .हमीम्। फ़ शारिबून शुर्बल् हीम्, हाज़ा नुज़ुलुहुम् यौमद्दीन्।

(सू० ५६ । रु० २ । आ० ५१ से ५६ तक)

अर्थ:—फिर ऐ गुमराहो ! (और क़यामत के) झुठलाने वालों ! तुमको (दोज़ख में) थूहर का दरख्त खाना होगा और इसी से पेट भरना पड़ेगा फिर ऊपर से झुलसता हुआ पानी पीना होगा और पीना (भी) होगा (तो डकडका कर) प्यासे ऊँटों का सा पीना, क़यामत के दिन यह उनकी ज़्याफ़त होगी।

(४९) लातजिदु क़ौमैंयोमिनून बिल्लाहि वल् यौमिल् आखिरि युवाद्दून मन् हाद्दल्लाह वरसूलहू वलौ कानू आबाअहुम् औ अब्नाअहुम् औ इख़्वानहुम् औ अशीरतहुम्, उलाइक कतब फ़ी क़ुलूबिहिमुल् ईमान व ऐयदहुम् बिरूहिम् मिन्हु, वयुद्खिलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तःतिहल् अन्हारु ख़ालिदीन फ़ीहा।

(सू० ५८ । रु० ३ । आ० २२)

अर्थ :—[illegible]) जो लोग अल्लाह और रोज़े आखिरत का यक़ीन रखते हैं उनको तो तुम न देखोगे और उसके रसूल के मुखालिफ़ों के साथ दोस्ती रखें, गो वह उनके बाप या उनके बेटे या उनके भाई या उनके कुन्बे ही के (क्यों न) हों यही (वह पक्के मुसलमान) हैं जिनके दिलों के अन्दर खुदा ने ईमान का नक़्श कर दिया है, और अपने फ़ैज़ाने ग़ैबी से उनकी ताईद की

है, और वह उनको (बहिश्त के ऐसे) बागों में ले जा दाखिल करेगा, जिनके तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी और (वह हमेशा) हमेशा उन्हीं में रहेंगे।

(५०) याऐयुहन्नबीयु ! जाहिदिल् कुफ़्फ़ार वल् मुनाफ़िक़ीन वग़्लुज़्व अ़लैहिम्, वमा वाहुम् जहन्नमु, व बेसल्मस्वीर्।

(सू० ६६। रु० २। आ० ६)

अर्थ:—ऐ पैग़म्बरो काफ़िरों के साथ (हाथ से) और मुनाफ़िक़ों के साथ (ज़बान से) जिहाद करते रहो, और उन पर सख्ती रखो, और उनका ठिकाना दोज़ख है, और वह (बहुत ही) बुरी जगह है।

(५१) इन्नल्लज़ीन कफ़रू मिन् अ:लिल् किताबि वल् मुश्रिकीन फ़ी नारि जहन्नम ख़ालिदीन फ़ीहा, उलाइक हुम् शर्रुल् बरीय:।

(सू० ६८। रु० १। आ० ६)

अर्थ:—बेशक अहले किताब और मुश्रिकीन में से जो लोग (दीने हक़ से) इन्कार करते रहे (वह आखिरकार) दोज़ख की आग में होंगे (और) उसमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे, यही बदतरीन खलायक हैं।